आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2015-17

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 4 अंक : 5 जनवरी, 2017 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

परिकल्पना एवं निर्देशन : कुलपति प्रो. (डॉ.) कर्नल ए.के. गहलोत

कुलपति सन्देश

पारंपरिक गौपालन की ओर लौटने का संकल्प लें

प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

प्रिय कृषक एवं पशुपालक भाई और बहिनों! नव वर्ष का शुभ आगमन आपकी सुख, शांति और समृद्धि में अभिवृद्धि की मंगल–कामना के साथ, मेरी हार्दिक शुभकामनाएं। 68वें गणतंत्र दिवस पर मेरी हार्दिक बधाई। माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति श्री कल्याणसिंह के निर्देश पर वेटरनरी विश्वविद्यालय के मुख्य परिसर के अग्रभाग में 100 फुट ऊंचाई पर 30X20 फुट साईज का राष्ट्रीय ध्वज ''तिरंगा'' चौबीसों घण्टे आप फहराता हुआ पाएंगे। पशुपालन हमारा एक पारंपरिक व्यवसाय है और भरोसेमन्द आय का स्त्रोत रहा है। गांवों से शहरों में पलायन की प्रवृत्ति और कई अन्य कारणों से लोग पशुपालन से विमुख हो रहे हैं। सदियों से चला आ रहा गौपालन घर–गृहस्थी को चलाने में अहम् रहा है। राज्य में 1.33 करोड़ गौवंश मौजूद है। हमारे स्वावलम्बन की ओर बढ़ने के लिए गौपालन एक कारगर उपाय है। गौपालन को नवीन तकनीकी का समावेश करके लाभदायक बनाया जा सकता है। राज्य में पाए जाने वाली छहों स्वदेशी गौवंश की नस्लों में उत्पादन की विलक्षण क्षमता विद्यमान है। वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशुधन अनुसंधान केन्द्रों पर पशुपोषण–आहार और स्वास्थ्य प्रबंधन से ही राठी, थारपारकर और साहीवाल नस्लों से 20–25 लीटर दूध प्रतिदिन तक प्राप्त किया गया है। ब्राजील में गिर नस्ल से 54 लीटर तक दूध प्राप्त किया गया है। वेटरनरी विश्वविद्यालय गौपालकों को तकनीकी सहयोग और प्रशिक्षण के लिए सदैव तैयार है। धरोहर जीन बैंक योजना के तहत श्रेष्ठ नस्ल के 800 नंदी प्रगतिशील पशुपालकों और गौशालाओं को सुलभ करवाए गए हैं। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक गौवंश की अच्छी नस्लों का ''हिमीकृत वीर्य'' तैयार कर रहे हैं। कृत्रिम गर्भाधान के लिए ये डोजेज पशुपालकों को उपलब्ध करवाई जाएगी। आओ! गणतंत्र दिवस के पुनीत पर्व पर हम अपने स्वदेशी गौपालन के अपने पारंपरिक धंधे की ओर लौटने का संकल्प लें।

(प्रो. ए. के. गहलोत)

सुराज प्रदर्शनी में माननीय मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे का अभिनन्दन करते हुए कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत

नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ

मुख्यमंत्री द्वारा पशुधन अनुसंधान केन्द्र, डग, झालावाड का अवलोकन

माननीय मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे ने 16 दिसम्बर 2016 को पशुधन अनुसंधान केन्द्र, डग, झालावाड़ का निरीक्षण करके नये संस्थान भवन की आधारशिला रखी। हेलीपेड पर प्रो. ए.के. गहलोत, कुलपति, राजुवास एवं प्रो. आर. के. नागदा, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, नवानियां, वल्लभनगर द्वारा मुख्यमंत्री महोदया का स्वागत किया गया। मुख्यमंत्री ने मालवी केटल ब्रीडिंग फार्म का निरीक्षण किया। कुलपति प्रो. गहलोत ने उन्हें मालवी गौ नस्ल की विस्तृत जानकारी देकर उसकी उपयोगिता के बारे में बताया। मुख्यमंत्री ने द्विवर्षीय डिप्लोमा संस्थान, पुस्तकालय, कार्यालय एवं लेब का निरीक्षण कर वहां उपलब्ध सुविधाओं का जायजा लिया। मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे ने नये पशुपालन डिप्लोमा संस्थान का भूमि पूजन करके मास्टर प्लान का अवलोकन किया। इस दौरान कुलपति प्रो. गहलोत ने भविष्य में परिसर में बनने वाले भवनों के बारे में भी जानकारी दी तथा हाड़ौती क्षेत्र में इससे होने वाले लाभ के बारे में विस्तार से बताया। मुख्यमंत्री ने सभा स्थल पर किसानों एवं पशुपालकों को सम्बोधित किया। मुख्यमंत्री श्रीमती राजे ने अपने सम्बोधन में राजुवास के कार्यों की सराहना की तथा इससे ग्रामीणों को होने वाले लाभ के बारे में बताया। इस अवसर पर सार्वजनिक निर्माण विभाग के मंत्री श्री युनूस खान, सांसद श्री दुष्यन्त सिंह, स्थानीय विधायक श्री रामचन्द्र सुनारीवाल एवं जनप्रतिनिधि उपस्थित थे।

कुलपति प्रो. गहलोत द्वारा राजुवास में 100 फीट ऊंचे विशाल तिरंगे का ध्वजारोहण

वेटरनरी विश्वविद्यालय में देश की आन, बान और शान के प्रतीक 100 फीट ऊंचे और विशाल राष्ट्रीय ध्वज को 20 दिसम्बर को समारोह पूर्वक फहराया गया। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत की अगुवाई में 1 राज–आर.एण्ड वी. एन.सी.सी. स्क्वाड के कमांडिग ऑफिसर कर्नल प्रदीप पूनिया, एन.सी.सी. के चार घुड़सवार और अन्य कैडेट्स ध्वज को ससम्मान लेकर समारोह स्थल पर पहुँचे तो उपस्थित विशाल जन समूह जय घोष के नारों के बीच इस ऐतिहासिक क्षण के साक्षी बने। प्रो. गहलोत ने विशाल तिरंगे को फहराकर सलामी दी। इस अवसर पर प्रो. गहलोत ने अपने सम्बोधन में कहा कि आसमां में लहराता तिरंगा हर पल हमें राष्ट्रीयता की भावना का संदेश देता रहेगा। चौबीसों घंटे लहराता राष्ट्रीय ध्वज विश्वविद्यालय के युवा और आम नागरिकों को देश भक्ति, त्याग और बलिदान की प्रेरणा देगा। राजुवास के प्रवेश प्रांगण और ध्वजारोहण स्थल को एक रमणीय स्थल में तब्दील किया जा रहा है जिससे यह सदैव लोगों के आकर्षण का केन्द्र बन कर देश भक्ति की प्रेरणा देता रहेगा।

मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे ने सुराज प्रदर्शनी बीकानेर में राजुवास की नवीन तकनीक और नवाचारों का किया अवलोकन

मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे ने राज्य सरकार के तीन वर्ष पूरे होने के अवसर पर 13 दिसम्बर, 2016 को बीकानेर में आयोजित सुराज संकल्प प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के बाद राजुवास स्टॉल में पशुपालन विकास, अनुसंधान के विभिन्न कार्यो का बारीकी से अवलोकन कर कुलपति प्रो. ए. के. गहलोत से विस्तृत जानकारी ली। इस अवसर पर मुख्यमंत्री राजे द्वारा ''हाइड्रोपोनिक्स हरा चारा उत्पादन में एक नई पहल'' वृतचित्र डी.वी.डी का विमोचन भी किया गया। प्रदर्शनी में मॉडल, फ्लेक्स, वीडियो फिल्म और पशुधन उत्पादों का प्रदर्शन किया गया। प्रदर्शनी में कम पानी और वैज्ञानिक रीति–नीति से पशुआहार के चारे उत्पादन की अजोला और हाइड्रोपोनिक्स तकनीक से उत्पन्न उत्पादों को दिखाया गया। प्रदर्शनी में राज्य की विख्यात देशी पशुधन राठी, थारपारकर, साहीवाल, कांकरेज, मालवी और गिर नस्लों के पशुओं के भव्य रंगीन मॉडल और विशेषताओं को लेकर जनमानस में गहरी रूचि और जागरूकता रही। वैज्ञानिकों द्वारा तैयार ब्रायलर की नई "राजुवास स्ट्रेन" और टर्की के सजीव मॉडल भी यहां रखे गए। पशुपालकों के उपयोगी वीडियो फिल्म का भी प्रदर्शन किया गया। प्रदर्शनी संचालन में विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. आर.के. धूड़िया के नेतृत्व में वैज्ञानिकों के दल ने आमजन को जानकारी दी। 17 दिसम्बर को मेले में प्रगतिशील कृषकों और पशुपालकों से वैज्ञानिक संवाद और व्याख्यान का आयोजन राजुवास द्वारा किया गया।

विधायक सुराणा द्वारा वी.यू.टी.आर.सी.,लूनकरणसर में नव–निर्मित भवन का लोकार्पण

वेटरनरी विश्वविद्यालय के राज्य में 12 वें पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र का विधिवत् लोकार्पण विधायक श्री मानिक चंद सुराणा ने 11 दिसम्बर को लूनकरणसर में किया। समारोह की अध्यक्षता वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने की। इस अवसर पर श्री सुराणा ने संबोधित करते हुए कहा कि वेटरनरी विश्वविद्यालय ने जमीनी हकीकत से कार्य करते हुए प्रशिक्षण केन्द्र खोलकर गांव–ढ़ाणी तक अपनी पहुँच बनाने का महत्ती कार्य किया है। केन्द्र के शुभारंभ से क्षेत्र के कृषकों और पशुपालकों को उन्नत तकनीकी और वैज्ञानिक रीति–नीति से पशुधन उत्पादन को बढ़ाने के लिए समुचित प्रशिक्षण मिलेगा। इससे पशुपालन को उपयोगी व्यवसाय बनाने में मदद मिलेगी। राज्य सरकार द्वारा आवंटित 5800 वर्ग मीटर क्षेत्रफल में यह केन्द्र खोला गया है। समारोह के अध्यक्ष कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने कहा कि विश्वविद्यालय ने राज्य के 17 जिलों में अपनी उपस्थिति दर्ज करके कृषक और पशुपालकों के हित में कार्य शुरू किए हैं। राज्य सरकार और विधायक महोदय के सद्प्रयासों से लूणकरणसर में वेटरनरी विश्वविद्यालय का प्रशिक्षण और अनुसंधान केन्द्र का शानदार भवन तैयार हो सका। समारोह के प्रारम्भ में विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. आर.के. धूड़िया ने केन्द्र की गतिविधियों की जानकारी देते हुए सभी का स्वागत किया। लूनकरणसर ग्राम पंचायत सरपंच रफीक मालावत, विश्वविद्यालय के वित नियंत्रक अरविन्द बिश्नोई, निदेशक (कार्य) श्री मोतीराम एवं प्रो. एस.सी. गोस्वामी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। अतिथियों ने विश्वविद्यालय के मासिक प्रकाशन 'पशुपालन नए आयाम' का लोकार्पण किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अशोक बेंदा ने किया।

नवीं राष्ट्रीय पशुधन चैम्पियनशिप में राजुवास की प्रदर्शनी

नवीं राष्ट्रीय पशुधन चैम्पियनशिप एवं एग्री एक्सपो–2016 में वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित चार दिवसीय प्रदर्शनी में बड़ी संख्या में पहुँचे कृषकों और पशुपालकों ने राजुवास द्वारा विकसित तकनीक और नवाचारों के बारे में जानकारी प्राप्त की। 2 से 5 दिसम्बर 2016 को पंजाब के पशुपालन विभाग और फिक्की द्वारा संयुक्त रूप से मुक्तसर (पंजाब) में इसका आयोजन किया गया। राजुवास प्रदर्शनी में स्वदेशी गौवंश के प्रदर्शन के साथ हरे चारे उत्पादन की अजोला, हाइड्रोपोनिक्स तकनीक में कृषकों ने गहरी रूचि दिखाई। प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. आर.के. धूड़िया ने एक्सपो सेमीनार में "स्वदेशी गौवंश का प्रबंधन कैसे करें" विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। नवीं राष्ट्रीय पशुधन चैम्पियनशिप प्रतियोगिता के निर्णायकों में राजुवास के 7 विशेषज्ञ वैज्ञानिकों ने सेवाएं प्रदान की। पशुओं की राष्ट्रीय प्रतियोगिता के घोड़ों की प्रतियोगिता में प्रो. टी. के. गहलोत व डॉ. सुरेश झीरवाल गाय–भैंसों के लिए प्रो. राजीव जोशी व डॉ. राजेश नेहरा, मुर्गी समूह में डॉ. सी.एस. ढाका तथा भेड़–बकरी समूह प्रतियोगिता में डॉ. अशोक गौड़ और डॉ. दीपिका धूड़िया ने निर्णायक की भूमिका अदा की।

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

वीयूटीआरसी चूरू द्वारा पशुपालक प्रशिक्षण शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू द्वारा 5, 7, 9, 16, 17, 19, 21 एवं 24 दिसम्बर को गांव सरदार शहर, पारेवाड़ा, मालकसर, ढाणी सुहाना, जेतासर, देपालसर, साण्डवा एवं गोपालपुरा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 285 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) केन्द्र द्वारा 336 पशुपालक प्रशिक्षित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) द्वारा 6, 14, 17, 20, 22, 23, 24, 26, 27 एवं 28 दिसम्बर को गांव 33 जीबी, मोटासर खुनी, बुरजेवाला, चानणाधाम, 12 एमएलडी, अमरपुरा जाटान, 19जीडी, 2–3 एसटीएम, भोपालपुरा एवं रेंयावाली गांवो में पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों के आयोजन में 336 पशुपालकों ने भाग लिया।

सिरोही केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सिरोही द्वारा 22, 23 एवं 24 दिसम्बर को गांव राजपुरा, पाड़वी एवं उथमान गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 100 पशुपालकों ने भाग लिया।

बाकलिया (नागौर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण शिविर का आयोजन

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया–लाड़नू द्वारा 5, 6, 7, 8, 9, 14, 15, 16, 20, 26 एवं 27 दिसम्बर को गांव लुकास, कापरोड़, सुपका, नाथुसर, दुजार, सेवा, दयालपुरा, पुंडारी, ललासकी एवं लाड़नू में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 291 पशुपालकों ने भाग लिया।

अजमेर केन्द्र द्वारा 279 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, अजमेर द्वारा 13, 15, 16, 21, 22, 26 एवं 28 दिसम्बर को गांव देवलिया, आलोली, लसाड़िया, बुबटिया, बेललियावास, रेवत एवं चिंरोज गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 155 महिला पशुपालकों सहित 279 पशुपालकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, डूंगरपुर द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 9, 12, 15, 20, 23 एवं 26 दिसम्बर को गांव देवला, खेड़ा, सुकानी, वाडा कुण्डली, लिमड़ी एवं माता गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों के आयोजन में 189 पशुपालकों ने भाग लिया।

कुम्हेर (भरतपुर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 3, 6, 7, 9, 15, 19, 23, 26, 27 एवं 28 दिसम्बर को गांव गुलपाड़ा, नगला मैंथना, कैर, परमदरा, नौनेरा, भदीरा, सोगर, नीमली, तथा करनअिसंह नगला गांवो में तथा 21 दिसम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 269 पशुपालकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, कोटा में 300 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कोटा द्वारा 5, 7, 9, 14, 16, 26, 27, 28 एवं 30 दिसम्बर को गांव कांकरा, लसाडीया कलान, हरीपुरा, धुलेट, काकरवाड़ा, नगपुरा, गंदीफली, किसनपुरा तकिया, सावनभादो गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 300 पशुपालकों ने भाग लिया।

बोजुन्दा (चितौड़गढ़) केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा (चितौड़गढ) द्वारा 16, 19, 24, 26, 29 एवं 31 दिसम्बर को गांव आतरी, धीरजी का खेड़ा, गाडरियों की ढाणी, पोटला कला, करेडिया एवं कनोज गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 212 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, धौलपुर द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 8, 9, 15, 19, 22, 26 एंव 28 दिसम्बर को गांव मालोनी, डोंडे का पुरा, गुरजा का पुरा, बाग का पुरा, गड़ी, रूड़का पुरा एवं हिनोथा चौकी गांवों में तथा 16 दिसम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों के आयोजन में 119 महिलाओं सहित कुल 351 पशुपालकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर द्वारा गोष्ठी एवं प्रशिक्षण आयोजित

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़) द्वारा 5, 14, 17, 20, 23 एवं 24 दिसम्बर को गांव फेफाना, 8 केएम, नाहरावाली, पीचकारन, परलीका एवं रतनपुरा गांवों एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 270 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु जैव विविधता संरक्षण पर पशुपालक प्रशिक्षण संपन्न

वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशु जैव विविधता संरक्षण केन्द्र द्वारा श्री डूँगरगढ़ जिले के लाछड़सर, भीचडी, सीमसीया और जनेऊ गांवों में 6–7 दिसम्बर को पशुपालक प्रशिक्षण शिविर में 69 पशुपालकों ने भाग लिया।

हाईड्रोपोनिक प्रौद्योगिकी द्वारा हरा चारा उत्पादन शुष्क क्षेत्र में वरदान है

उत्तम कोटि का हरा चारा पशुओं में उत्पादन और प्रजनन के लिए आवश्यक है लेकिन इसकी अनुपलब्धता चिंता का विषय है। तेजी से बढ़ते शहरीकरण/औद्योगिकीकरण ने चारागाह भूमि क्षेत्र को कम किया है, जिसके परिणामस्वरूप पशुओं में हरे चारे की उपलब्धता प्रभावित हो गई है। इसके अलावा जोत भूमि का छोटा आकार, पानी की कमी, उच्च लवणता, मिट्टी की कम जल धारण क्षमता, अधिक चारा उत्पादन का समय (50–65 दिन) और श्रम की आवश्यकता, साल भर एक सी गुणवत्ता की अनुपलब्धता, खाद की जरूरत एवं जलवायु बदलाव, हरा चारा उत्पादन की प्रमुख बाधाएं हैं। वर्तमान में हरे चारे के उत्पादन के लिए हाइड्रोपोनिक्स प्रौद्योगिकी सबसे उपयुक्त विकल्प उभर कर आ रहा है। यह विशेष नियंत्रित पर्यावरण कक्ष (15–32 सेन्टीग्रेड तापमान और 80–85% की सापेक्ष आर्द्रता) में 7 दिनों की अल्प विकास की अवधि में उगाया जाता है। जौ, गेहूं, जई, मक्का और अन्य अनाज का प्रयोग किया जाता है। एक किलो अनाज से 6–8 किलो ताजा हरा चारा उगता है। चारे को 15–30 से.मी. ऊंचाई होने पर खाने के काम में लिया जाता है। अनाज के प्रकार पर ऊंचाई निर्भर है। इसमें कीटनाशकों और कृत्रिम विकास प्रमोटरों जैसे रसायनों की जरूरत नहीं होती है। पारंपरिक पद्धति से चारा उत्पादन की तुलना में हाइड्रोपोनिक प्रौद्योगिकी में केवल 2–3 लीटर पानी की आवश्यकता होती है। यह प्रोटीन, फाइबर, विटामिन, खनिज का समृद्ध स्त्रोत है। इसके सेवन से दुधारू पशुओं में दूध उत्पादन में सुधार और बछड़े–बछड़ियों के विकास दर में वृद्धि हुई है। सीमित क्षेत्रों में चारा उत्पादन की इस प्रौद्योगिकी का विशेष रूप से महत्व है। यह शुष्क और अर्ध शुष्क क्षेत्रों के लिए एक वरदान है जहां हरा चारा विकसित करने के लिए सारे तथ्य प्रतिकूल हैं। इस प्रौद्योगिकी को अपनाकर हम हरे चारे की जरूरत की पूर्ति कर सकते हैं और पशुओं की उत्पादकता बढ़ा सकते हैं।

डॉ. रूपल दाधीच एवं प्रो. आर.के. धूड़िया
वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर (मो. 9929670049)

मुर्गियों में कोल्ड स्ट्रैस का प्रबंधन कैसे करें ?

जनवरी में प्रदेश में वातावरण का तापमान काफी कम हो जाता है। वातावरण में अत्यधिक तापमान गिरने से मुर्गियों के शरीर के तापमान में अप्रत्यशित कमी आती है जिसकी वजह से उत्पादन (अंडे व मांस) में काफी गिरावट आती है और भारी संख्या में मुर्गियों व चूजों की मृत्यु भी हो जाती है। इस अवस्था को कोल्ड स्ट्रैस या हाइपोथर्मिया कहते हैं। यह समस्या सामान्यतः असंगठित अथवा शौकिया मुर्गीपालन में ज्यादा देखने को मिलती है। यदि इस मौसम में मुर्गियों व चूजों का समुचित प्रबंधन नहीं किया जाता है तो मुर्गीपालक को काफी आर्थिक हानि उठानी पड़ती है। इस प्रकार की समस्या सामान्यतः मुर्गीपालक की लापरवाही के कारण ज्यादा देखने को मिलती है। यदि मुर्गीपालक जरा भी सावचेत रहे तो इस प्रकार के नुकसान से आसानी से बचा जा सकता है। कोल्ड स्ट्रैस को मुर्गीपालक आसानी से पहचान

सकते है। मुर्गियां सुस्त हो जाती हैं, शरीर कांपने लगता है, पंख खड़े हो जाते हैं, मुर्गी एक स्थान पर बैठ जाती है, श्लेष्मा झिल्लियाँ पीली पड़ने लग जाती हैं, श्वासदर में कमी आती है और कुछ ही समय में मृत्यु हो जाती है। कोल्ड स्ट्रैस से बचाव के लिए अत्याधिक सर्दी के समय मुर्गियों के घर का विशेष तौर पर प्रबंधन अच्छी तरह करें। रात के समय मुर्गियों को मुर्गीघर में रखें। मुर्गीपालक यह अवश्य सुनिश्चित कर ले कि सर्दी के समय कोई मुर्गी घर से बाहर तो नहीं रह गयी है। सीधी सर्द हवाओं से मुर्गियों का बचाव करने के लिए दरवाजे एवं खिड़कियों पर टाट की पल्लियाँ लगा दें, लेकिन घर के अन्दर स्वच्छ हवा का बहाव जरूर होना चाहिए। यदि संभव हो तो पीने का पानी गुनगुना करके देवें। इसके साथ ही मुर्गीपालक यह ध्यान रखें कि सर्दी से बचाव के लिये घर के अन्दर आग न जलायें एवं धुंआ न करें। धुंए से मुर्गियों में श्वांस संबंधी रोगों का खतरा बढ़ जाता है। दिन के समय मुर्गियों को धूप में खुले में छोड़ देना चाहिए। इस समय मुगियों को ज्यादा ऊर्जा कि आवश्यकता होती है अतः उन्हें ऊर्जा से भरपूर संतुलित आहार दें। सर्दी के मौसम में वर्षा (महावट) एवं ओलावृष्टि के समय मुर्गियों का विशेष ध्यान रखें। इसके बावजूद भी यदि मुर्गियों में कोल्ड स्ट्रैस के लक्षण देखें तो पशु चिकित्सक से तुरन्त सम्पर्क कर अपनी मुर्गियों की जान बचायें।

– प्रो. ए. के. कटारिया
प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास (मो. 9460073909)

अपने विश्वविद्यालय को जानें

पशुधन अनुसंधान केन्द्र : वल्लभनगर (उदयपुर)

पशुधन अनुसंधान केन्द्र, वल्लभनगर की स्थापना वर्ष 1986 में हुई। पूर्व में यह केन्द्र राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के अन्तर्गत था जो अब राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के अन्तर्गत कार्यशील है। वर्तमान में यहां एक मेगा शीप सीड प्रोजेक्ट चल रहा है जो कि दक्षिण राजस्थान में भेड़ की प्रमुख नस्ल सोनाडी भेड़ के प्रजनन और उन्नयन का कार्य कर रही है। परियोजना में 7050 सोनाडी भेड़ पंजीकृत हैं जो कि क्षेत्र के 118 पशुपालकों से सम्बन्धित हैं। ए.आई.सी.आर.पी द्वारा पोषित प्रोजेक्ट ''सिरोही नस्ल की बकरियों के विकास'' का कार्य भी इस केन्द्र, पर किया जा रहा है। जिसमें 1220 बकरियां फील्ड यूनिट्स के अन्तर्गत पंजीकृत हैं। भैंस उन्नयन की नेटवर्क परियोजना के अन्तर्गत केन्द्र पर 127 सूरती नस्ल की भैंसों का पालन किया जा रहा है जिनका दुग्ध यहां की आय का स्त्रोत है। साथ ही उत्तम पाड़े का जर्म प्लाज्म इकट्ठा करके गौशाला, ग्राम पंचायत, एन.जी.ओ., तथा पशुपालकों को उपलब्ध करवाया जाता है। यह केन्द्र सूरती भैंस के संरक्षण पर भी कार्य कर रहा है। वर्तमान में 1451 भैंसे परियोजना में पंजीकृत हैं। ''राष्ट्रीय कृषि विकास योजना'' के अन्तर्गत इस केन्द्र पर 272 शुद्ध गीर गौवंश उपलब्ध है। फार्म से 54 उन्नत सांड़ वितरित किये जा चुके हैं और 1300 गीर सीमन स्ट्रा वितरित की जा चुकी है। पशुधन के लिए चारा उत्पादन इसी केन्द्र पर किया जाता है। हाइड्रोपोनिक्स विधि द्वारा हरा चारा उत्पादन की व्यवस्था भी की गई है। सभी पशुओं का समय–समय पर टीकाकरण, कृमिनाशक दवाओं और उपचार की व्यवस्था है। पशुपालकों को भी समय–समय पर प्रशिक्षण दिया जाता है एवं उन्नत नस्ल के पशुओं का वितरण किया जाता है। एम.एस.एस.पी. परियोजना के अन्तर्गत वर्तमान में फार्म पर 71 नर मेंढ़े एवं 298 मादा भेड़ें उपलब्ध हैं तथा केन्द्र से अब तक 202 प्रजनन योग्य मेंढ़े वितरित किये जा चुके हैं।

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–जनवरी, 2017

पशु रोग	पशु/पक्षी प्रकार	क्षेत्र
फड़किया रोग	भेड़, बकरी	जयपुर, धौलपुर, बीकानेर
सर्रा (तिबरसा)	गाय, भैंस, ऊँट	धौलपुर, श्रीगंगानगर, भरतपुर, हनुमानगढ़, कोटा
एम्फीस्टोमियेसिस	गाय, भैंस	भरतपुर, उदयपुर, कोटा
फेसियोलियेसिस (यकृत कृमि)	गाय, भैंस, भेड़, बकरी	भरतपुर, कोटा, धौलपुर, डूँगरपुर, हनुमानगढ़, सवाई–माधोपुर, सीकर, बूंदी
गलघोंटू	गाय, भैंस	जयपुर, चित्तौड़गढ़, पाली, टौंक, भरतपुर, उदयपुर, अलवर, भीलवाड़ा, दौसा
लंगड़ा बुखार	गाय, भैंस	श्रीगंगानगर, भरतपुर, हनुमानगढ़, अलवर
मुँहपका–खुरपका रोग	गाय, भैंस, भेड़, बकरी	दौसा, जयपुर, अनूपगढ़, धौलपुर, बीकानेर, अलवर, अजमेर, सवाईमाधोपुर
बबेसियोसिस (खून मूतना)	गाय, भैंस	धौलपुर, बून्दी, डूँगरपुर, बीकानेर
माता रोग (चेचक)	भेड़,ऊँट	बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ, जैसलमेर, पाली
पी.पी.आर.	भेड़, बकरी	नागौर, जोधपुर, बीकानेर, हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर, चूरू, सीकर, उदयपुर, पाली, सिरोही
एनाप्लाज्मोसिस	गाय	भरतपुर, सीकर, जयपुर
न्यूमोनिक पास्चुरेल्लोसिस	गाय, भैंस	सीकर, नागौर, अलवर, झुंझुंनूं
जोहनीस रोग	भेड़, गाय	बीकानेर, जैसलमेर, श्रीगंगानगर
सी.सी.पी.पी. (एक प्रकार का न्यूमोनिया)	भेड़, बकरी	बीकानेर, जैसलमेर, श्रीगंगानगर, धौलपुर, जोधपुर, अजमेर
रानीखेत रोग	मुर्गियां	अजमेर, जयपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, अलवर, कोटा
इन्फेक्सीयस ब्रोंकाइटिस	मुर्गियां	अजमेर, जयपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, अलवर, कोटा

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. जी.एस. मनोहर, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, प्रो. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर एवं प्रो. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान, एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर। फोन– 0151–2204123, 2544243, 2201183

अपने स्वदेशी भेड़ वंश को पहचानें

मगरा भेड़ : गौरव प्रदेश का

मगरा नस्ल की भेड़ अपनी चमकदार ऊन के कारण मशहूर है। इसे बीकानेर, बीकानेरी चोकला तथा चकरी के नाम से भी जाना जाता है। यह मुख्यतः राजस्थान के बीकानेर, नागौर, जैसलमेर तथा चूरू जिलों में पाई जाती है। हालांकि शुद्ध नस्ल की मगरा भेड़ बीकानेर के पूर्वी–दक्षिणी क्षेत्र में पाई जाती है। यह भेड़ की एक मात्र नस्ल है जिससे चमकदार कारपेट ऊन प्राप्त होती है। संकर प्रजनन के कारण शुद्ध नस्ल की कुछ ही भेड़ें शेष बची हैं। इसलिए इसके सरंक्षण की अत्यन्त आवश्यकता है। इस नस्ल के चयन द्वारा सुधार के प्रयास किये जा रहे हैं। इस नस्ल को मुख्यतया ऊन एवं मांस के लिए पाला जाता है। यह एक मध्यम से बड़े आकार की नस्ल है जिसके सफेद चेहरे पर आंखों के चारों तरफ भूरे रंग को घेरा होता है जो इस नस्ल की मुख्य पहचान है। इसकी चमड़ी का रंग गुलाबी, कान छोटे से मध्यम आकार के नलीदार होते हैं। मध्यम आकार की पूंछ पतली होती है। मगरा नस्ल की भेड़ डेढ़ से दो साल में वयस्क हो जाती है तथा एक बार में एक ही मेनने को जन्म देती है। साल में तीन बार मगरा भेड़ से ऊन प्राप्त की जाती है जिन्हें मौसम मौसम के अनुसार सियाडु, आषाढु तथा चैतु के नाम से जाना जाता है। सियाडु व आषाढु से प्राप्त ऊन पीलापन लिए होने के कारण चन्दनिया के नाम से भी जानी जाती है। चैतु ऊन अधिक सफेद होती है तथा इसमें अशुद्धियां भी अपेक्षाकृत कम होती है जिस कारण इससे अधिक मूल्य प्राप्त होता है । एक साल में दो से सवा दो किलो ऊन प्राप्त हो जाती है। ऊन के रेशे का व्यास 32–38 माइक्रॉन, लम्बाई 4.2–6.8 सेमी होती है। मैड्युलेन की प्रतिशतता लगभग 48 होती है। वयस्क भेड़ का भार लगभग 25–30 किलो, लम्बाई लगभग 65–70 सेमी व कद लगभग 65 सेमी होता है।

सफलता की कहानी

पशुपालन को मानते है मिश्रित खेती का प्रमुख आधार

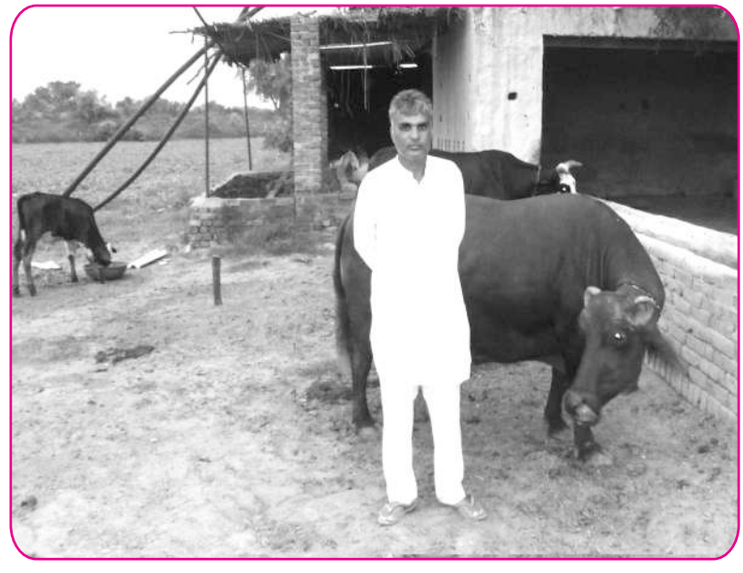

हरित और श्वेत क्रांति के परिणाम स्वरूप देश खाद्यान में आत्म निर्भर हो गया। अब गुणवत्तापूर्ण और जैविक उत्पादों की जरूरत महसूस की जा रही है। उत्तम और अधिक आय वाले उत्पादन के लिए मिश्रित और विविधिकरण जरूरी हो गया है। इस बात को प्रगतिशील पशुपालक कृष्ण धारीवाल ने समझा और स्वीकार करते हुए कृषि और पशुपालन को मिश्रित रूप से शुरू किया। मिश्रित खेती के सुखद परिणामों से उनका उत्साह दुगुना हो गया है। हनुमानगढ़ जिले के भादरा तहसील के गांव लाखनवास निवासी कृष्ण ने चार वर्ष पूर्व परम्परागत खेती से काम धंधे की शुरूआत की। उनको 18 बीघा जमीन से मात्र एक लाख रुपये सालाना कमाई होती थी, परंतु उन्होंनें खेती में विविधिकरण के साथ पशुपालन, मछलीपालन, बागवानी आदि को मिश्रित खेती के रूप में अपनाया तो उनकी आय दुगनी हो गई। गत दो वर्ष से लगतार कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर के सम्पर्क में रहकर केन्द्र के वैज्ञानिकों से आधुनिक खेती की नवीन तकनीकी को समझा। उन्होंनें पाया कि पशुपालन को बढ़ाकर वे अपनी मिश्रित खेती को और अधिक मजबूत एवं जैविक खेती को बढ़ावा देकर अपने उत्पादन की उत्तमत्ता को बढ़ा सकते हैं। उन्होंनें वर्तमान में अजोला, वर्मीकम्पोस्ट, जल प्रबंधन हेतु बनाई डिग्गी में मछलीपालन, बागवानी एवं विशेषतः थाईलैंड किस्म के नींबू इत्यादि के साथ अपनी खेती को मिश्रित रूप से आगे बढ़ा रहे हैं। 4–5 पशुओं से होने वाली आय को और उनसे मिलने वाले गोबर की खाद का, कम्पोस्ट एवं अजोला आदि का उपयोग कर वो मानते हैं कि ये सभी उनकी खेती का आधार स्तम्भ हैं। वर्तमान में उनकी सालाना आय 3 लाख रुपये है और इससे वे अपनी आर्थिक स्थिति को मजबूत करने के साथ खेती में नवीनीकरण को अपनाने पर जोर दे रहे हैं। आज क्षेत्र में उनकी अलग पहचान है, गत वर्ष तहसील स्तर पर चयनित कर उन्हें आत्मा की तरफ से पुरस्कृत भी किया गया है।

सम्पर्क : श्री कृष्ण धारीवाल, भादरा (08432001312)

निदेशक की कलम से...

स्वच्छ दूध का उत्पादन अधिक लाभकारी है

प्रिया पशुपालक और कृषक भाईयों व बहनों!

नए वर्ष 2017 का आगमन हम सब के लिए सुखी, समृद्धि, स्वस्थ और लाभकारी रहे, ऐसी मैं मंगलकामना करता हूं। दुग्ध उत्पादक पशुओं से स्वच्छ दूध का उत्पादन हमारी पहली प्राथमिकता होनी चाहिए। स्वच्छ दूध उत्पादन से आय भी अधिक प्राप्त की जा सकती है और यह निरोगी काया के लिए भी जरूरी है। स्वच्छ दूध उत्पादन के लिए गायों की स्वच्छता जरूरी है ताकि वे रोग मुक्त होकर पूर्णतया स्वस्थ बनी रहें। दूध दुहने से पहले आवश्यक है कि गाय भूखी न हो। दुधारू पशुओं को खिलाने में इस बात का विशेष ध्यान रहे कि अपना भोजन दुहने के समय से लगभग आधा घण्टे पूर्व पूरा खा लें अन्यथा चारे की धूल आदि उड़कर दूध को गंदा कर देगी। दूध निकालने के समय गाय के पास किसी भी प्रकार की गन्दगी नहीं होनी चाहिए। दुहने के निश्चित समय पर स्वच्छ जगह पर गाय को बांधना चाहिए। दुहने के समय दुहने वाले के हाथ साफ हों तथा नाखुन कटे हुए हों। दुहने वाले बर्तन भी साफ तथा जीवाणु रहित कर लिये जायें। दुहने से पहले गाय के अयन को साफ पानी से या लाल दवा के घोल से अच्छी तरह धोकर, कपड़े से पौंछ देना चाहिए ताकि दूध निकालते समय किसी भी प्रकार की गन्दगी दूध में न मिले। दुहने के समय पशु के साथ नम्रता का व्यवहार करना चाहिए तथा गाय को हमेशा एक निश्चित समय पर ही दुहना चाहिए क्योंकि दुहने का समय, बर्तनों की खटपट, बच्चे का रंभाना, ग्वाले की आवाज, थनों को मसलना आदि सभी बातें गाय को स्वतः दूध देने के लिए उत्तेजित करती हैं। यह आवश्यक है कि दूध शीघ्र से शीघ्र या 6–7 मिनट में निकाल लेना चाहिए। दूध को शीघ्र खराब होने से बचाने के लिए विविध उपयोग करें प्रसंस्करण की विधियों को अपनाना आज समय की मांग है। दूध की पैकेजिंग, विभिन्न उप उत्पादों का प्रसंस्करण करके आप कई गुना अधिक लाभ अर्जित कर सकते है। **–प्रो. राजेश कुमार धूड़िया,** निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास (मो. 9414283388)

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित ''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी चैनलों से प्रत्येक गुरूवार को प्रसारित **''धीणे री बात्यां''** के अन्तर्गत **दिसम्बर, 2016** में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकगण अपनी वार्ताएं प्रस्तुत करेंगे। राजकीय प्रसारण होने के कारण कभी कभी गुरूवार के स्थान पर इन वार्ताओं का प्रसारण अन्य उपलब्ध समय पर भी किया जा सकता है। पशुपालक भाईयों से निवेदन है कि प्रत्येक गुरूवार को प्रदेश के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों के मीडियम वेव पर सायः 5:30 से 6:00 बजे तक इन वार्ताओं को सुनकर पशुपालन में लाभ उठाएं।

क्र.सं.	वार्ताकार का नाम व विभाग	वार्ता का विषय	प्रसारण तिथि
1	**प्रो. जी.एन.पुरोहित** **9414325045** पशु मादा रोग एवं प्रसूति विभाग, सी.वी.ए.एस., बीकानेर	पशुओं में गर्भपात : कारण और निवारण	05.01.2017
2	**प्रो. बसन्त बैस** **9413311741** विभागाध्यक्ष, पशुधन उत्पादन एवं तकनीक विभाग, सी.वी.ए.एस., बीकानेर	वर्तमान परिपेक्ष्य में पशुपालन में विविधिकरण का महत्व	12.01.2017
3	**प्रो. राधेश्याम आर्य** **9116009593** पशुपोषण विभाग, सी.वी.ए.एस., बीकानेर	पशुपोषण में खाद्य सम्पूरक का महत्व	19.01.2017
4	**डॉ. धर्मसिंह मीणा** **9414250161** पी.जी.आई.वी.ई.आर,जयपुर	सर्दी के मौसम में पशुओं में होने वाली बीमारियां एवं उपचार	26.01.2017

मुस्कान !

संपादक
प्रो. आर. के. धूड़िया
सह संपादक
प्रो. ए. के. कटारिया
प्रो. उर्मिला पानू
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संयुक्त निदेशक (जनसम्पर्क) से.नि.
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com
पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने है।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. आर. के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन विजय भवन पैलेस राजुवास बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. आर. के. धूड़िया